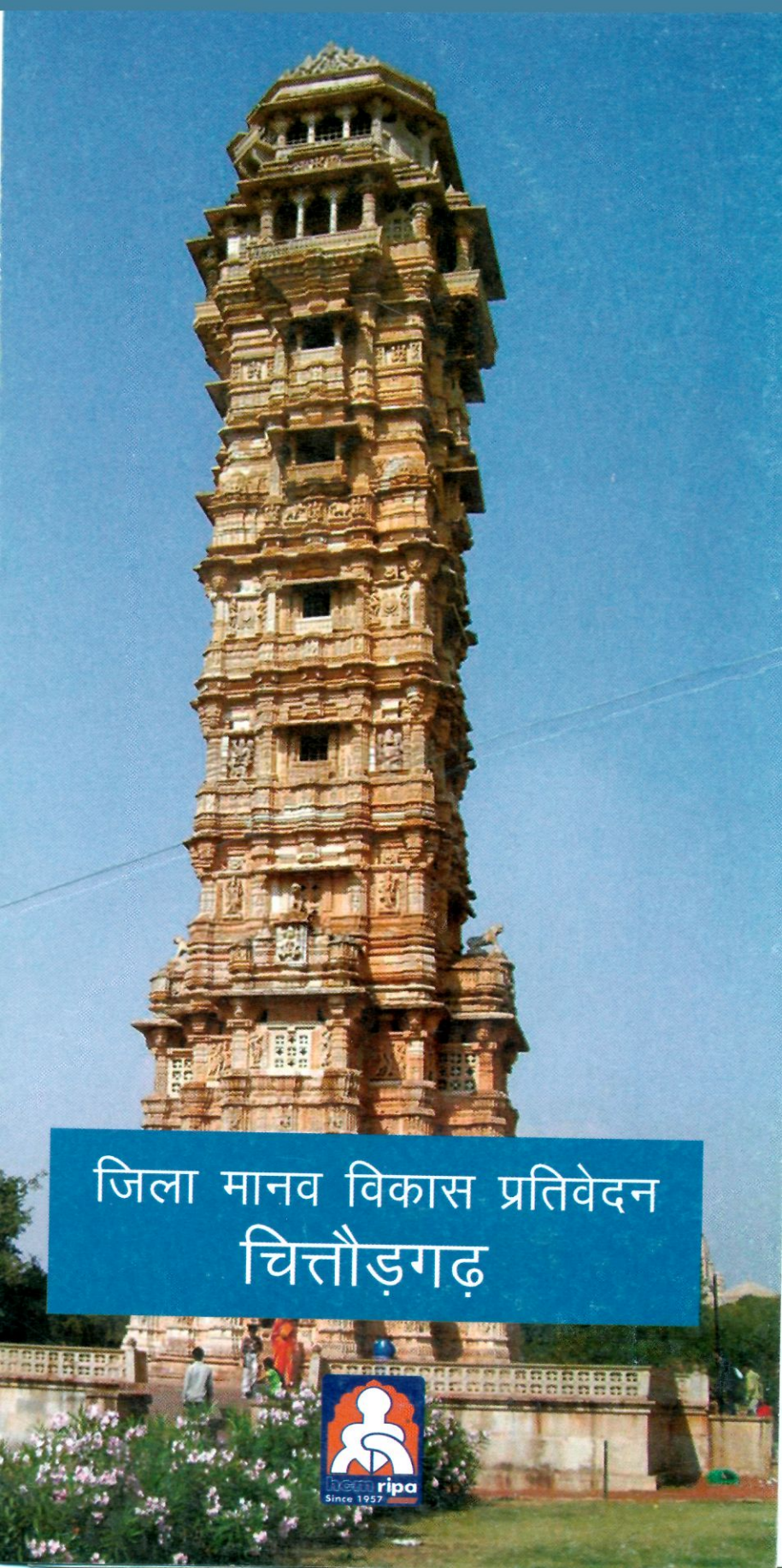

जिला मानव विकास प्रतिवेदन
चित्तौड़गढ़

hcfmripa
Since 1957

जिला मानव विकास प्रतिवेदन
चित्तौड़गढ़

परिचयात्मक विवरण

चित्तौड़गढ़ जिला राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में 23°.32′ से 25°.13′ उत्तरी अक्षांश और 74°.12′ से 75°.49′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जिसके पूर्वी भाग में कोटा और मध्यप्रदेश, दक्षिण में प्रतापगढ़, पश्चिम में उदयपुर व राजसमन्द तथा उत्तर में भीलवाड़ा व बूंदी जिले स्थित हैं। चम्बल, बनास, बेड़च प्रमुख नदियाँ हैं तथा गम्भीरी, वागन, बस्सी, ओराई, बड़गांव, भूपाल सागर, डिण्डोली, बाडी मानसरोवर, सांवरिया, सरोवर, मुरलिया, बनाकिया, कपासन, बोरदा, सोनियाना, राजगढ़, सरोपा, डोराई, रूपारेल प्रमुख बांध/तालाब हैं।

जिले में 10 तहसीलें क्रमशः चित्तौडगढ़, गंगरार, राशमी, कपासन, बेगू, रावत भाटा, निम्बाहेड़ा, भदेसर, बडी सादडी, तथा डूंगला है जो उपखण्ड भी हैं। ग्यारह पंचायत समिति हैं तथा 288 ग्राम पंचायतें हैं। इसी के साथ चित्तौडगढ़, बडी सादडी, बेगूं, रावतभाटा, कपासन एवं निम्बाहेड़ा में नगरपालिकाएं हैं।

प्राकृतिक संसाधन

प्राकृतिक संसाधनों के रूप मे स्लेट, फाइलाइट, डोलोमाइट की पट्टियों से अन्तरविशिष्ट अभ्रक की स्तरित चट्टाने हैं जिसमें ढलवा पत्थर, ग्रिटस पोसिलेण्टर, चूना पत्थर तथा स्लेटी पत्थर सम्मिलित है। भदेसर, भैंसरोडगढ़, बेगूं क्षेत्रों की मिट्टी पहाडी ढलान वाली व कम गहरी हैं जबकि राशमी, गंगरार, कपासन, डूंगला, भूपालसागर पंचायत समिति की मृदाएं हल्के भूरे रंग की हैं। बडी सादडी, निम्बाहेडा व चित्तौडगढ़ पंचायत समिति की मृदाएं गहरी मध्यम भूरे रंग की हैं।

चित्तौडगढ़ में वन क्षेत्र 2766.62 वर्ग किलोमीटर है जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का 25.48 प्रतिशत है किन्तु सघन वन क्षेत्र तो 1675 वर्ग किलोमीटर ही है। प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र 0. 15 हैक्टेयर है जो राष्ट्रीय औसत 0.08 और राज्य औसत 0.06 हैक्टेयर से अधिक है।

जिले में 349 ग्राम वन समितियॉ बनाई गई हैं। मुख्य रूप से धोंकरा, बबूल, आम, बरगद, गूलर, जामुन, खेर, खेजडी, बांस प्रमुख वृक्ष हैं। घास आरोठा, तेंदु पत्ता, शहद, मोम, महुआ, सीताफल गौण वन उपज है। जिले में वन्य जीव अभयारण्य बस्सी, जवाहर सागर, भैंसरोड़ गढ़, डियर पार्क, किला चित्तौडगढ़ तथा सीतामाता घने वन क्षेत्र में है।

जिले में पेयजल में फ्लोराइड, नाइट्रेट, या अन्य दो पैरामीटर टी डी एस मानक मान से अधिक पाए गए हैं।

जनसंख्या

वर्ष 2011 में कुल जनसंख्या 15.44 लाख है। जिसमें से 7.84 लाख पुरूष एवं 7.60 लाख महिलाएं हैं। ग्रामीण जनसंख्या 12.59 लाख एवं शहरी 2.85 लाख है। घनत्व 193 प्रति वर्ग किलोमीटर व लिंगानुपात 970 था। दशकीय वृद्धिदर 16.09 है। वर्ष 2001

के अनुसार अनुसूचित जाति एवं जनजाति क्रमशः 13.90 प्रतिशत एवं 21.53 प्रतिशत है।

पशुधन

वर्ष 2007 की गणना के अनुसार 7,20,902 गाय व बैल, 4,74,300 भैंस, 79,951 भेड़ 6,86,401 बकरी, 2,581 घोड़े व टट्टू, 2,869 गधे व खच्चर, एवं 6,963 ऊँट व सूअर हैं।

प्रमुख फसल

चित्तौडगढ क्षेत्र में गेहूं, ज्वार, मक्का, जौ, मूंगफली, सोयाबीन, चना, तिल व राई प्रमुख फसलें है। जिले में 20,140 हैक्टेयर में अजवाईन, लहसन, मैथी, मिर्च, बैंगन, टमाटर, भिण्डी, फूल गोभी, मटर, कूकरविट्स, ऑवला, अमरूद, सन्तरा, अनार, नीम्बू की फसलें उगाई जाती हैं।

सिंचाई के साधनों में पम्प सैट मुख्य है। वर्ष 2008–09 में 74,627 पम्प सैट सिंचाई के लिए काम में आए। सामान्य वर्षा 84.15 से.मी. है। जोत का आकार औसतन 2.00 हैक्टेयर है।

राणाप्रताप सागर, गम्भीरी, वागन, ओराई, मेजा फीडर बांध, छोटे जलाशय मत्स्य पालन के अच्छे स्त्रोत हैं। गम्भीरी फिश फार्म, राणाप्रताप सागर फिश फार्म व चम्बल वैली फिश फार्म भी मत्स्य के लिए उत्पादन केन्द्र हैं।

खनिज व उद्योग

वर्ष 2009–10 में प्रधान खनिजों का उत्पादन 15799.494 लाख रुपयों का हुआ जिनमें लाईमस्टोन, चाइना क्ले, रेड ऑफर, सिलीकासेण्ड, तथा क्वार्ट्ज खनिज सम्मिलित हैं। अप्रधान खनिजों का उत्पादन 9791.21 लाख रुपयों का हुआ जिनमें लाइमस्टोन बर्निंग, ईट मिट्टी, चिप्स पाउडर, कंकर बजरी, लाइम स्टोन मार्बल, मेसनरी स्टोन, मुरम, पट्टीकातला सम्मिलित हैं।

वर्ष 2009 में सूक्ष्म एवं लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 7,378 थी और इससे 25,634 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध हो रहा था। यहाँ आदित्य सीमेन्ट, बिडला

सीमेन्ट, जेके सीमेन्ट जैसे बडे व मध्यम दर्जे के उद्योग भी स्थित हैं। खादी एवं ग्रामोद्योग की 8,563 इकाइयों के माध्यम से 25,689 व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है।

राज्य सरकार ने क्लस्टर विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत 7 औद्योगिक क्षेत्रों में 813 भूखण्ड का निर्माण किया जिनमें से 790 आबंटित किए जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त 6 जिला उद्योग केन्द्रों के 129 भूखण्डों में से 99 भूखण्ड आबंटित किए जा चुके हैं जिनसे परमपरागत दस्तकार लाभान्वित हो रहे हैं।

पर्यटन, कला एवं संस्कृति

चित्तौडगढ़ दुर्ग पर बने स्थल व मंदिर, सांवरिया जी का मन्दिर, मण्डफिया, पाण्डोली में *झॉतला माता जी का मन्दिर, जोगनिया माता का मन्दिर, मातृकुण्डिया, दीवान शाह* दरगाह, कल्ला बावजी का स्थान, बिडला मन्दिर दर्शनीय स्थल हैं। मेनाल, गंभीरी बांध, बस्सी डोराई, घोसुण्डा बॉध अच्छे पिकनिक स्थल हैं। प्रतापगढ़ की थेवा कला, बस्सी की काष्ठ कला, आकोला की रंगाई छपाई, तुर्रा कलंगी, भवई चित्तौडगढ़ का मीरा महोत्सव, जोहर मेला, मेवाड उद्योग मेला, जलझूलनी एकादशी का मेला, निम्बाहेडा का दशहरा मेला चित्तौडगढ में प्रसिद्ध हैं।

आजीविका पैटर्न

चित्तौडगढ कृषि प्रधान जिला है जिसका 2006–07 में जिले के शुद्ध घरेलु उत्पाद में हिस्सा 37.68 प्रतिशत रहा। जिले में 5,64,564 हैक्टेयर कृषि योग्य तथा 3,81,873 हैक्टेयर अकृषि योग्य क्षेत्र है। जिले के कुल 9,30,339 लोग कार्यरत हैं। इनमें से 66.74 प्रतिशत कृषि कार्य करते हैं जबकि 10.64 प्रतिशत कृषि श्रमिक हैं। गैर कृषि कार्यों यथा घरेलु उद्योगों में 1.89 प्रतिशत तथा अन्य रोजगारों में 20.84 प्रतिशत जनसंख्या लगी हुई है।

नरेगा के अन्तर्गत 1,69,650 परिवारों को रोजगार उपलब्ध करवाया गया। चित्तौडगढ़ में कुल 89,803 परिवार बीपीएल में आते हैं और कुल 2,214 स्वयं सहायता समूह हैं जिनमें 25,568 परिवार एसएचजी से सम्बद्ध पाये गये हैं जो कुल बीपीएल परिवारों के 29 प्रतिशत हैं।

कृषि क्षेत्र में 51.27 प्रतिशत महिलाएँ कार्यरत हैं। कुल श्रमिकों में अनुसूचित जनजाति, श्रमिकों की संख्या 77 प्रतिशत है। जिले में 63.31 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या के लिए कृषि ही आजीविका का मुख्य साधन है, 17.48 प्रतिशत भाग आजीविका के लिए आकस्मिक श्रम पर आधारित है। वेतन भोगी कर्मियों का अनुपात मात्र 4.67 प्रतिशत है। चित्तौडगढ़ में 67.37 प्रतिशत कृषक लघु एवं सीमान्त हैं। जिनकी कुल जोत योग्य भूमि 30.28 प्रतिशत ही है। जिले का वर्ष 2008–09 में 2,00,365 हैक्टयर सिंचित है। बोये गए कुल क्षेत्र का मात्र 40.70 प्रतिशत ही सिंचित है।

ग्राम स्तर पर ग्राम सेवा सहकारी समितियॉ, प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर क्रय विक्रय सहकारी समितियॉ हैं जो जिला स्तर पर केन्द्रीय सहकारी बैंक से सम्बद्ध हैं। जिले में कपासन, चित्तौडगढ़, निम्बाहेडा, बेगूं एवं प्रतापगढ़ में कृषि उपज मण्डियां हैं एक फल एवं सब्जी मन्डी भी है। चित्तौडगढ़ में राष्ट्रीय एवं निजी क्षेत्र की 95 बैंकिग सेवा केन्द्र हैं जबकि 1,707 गांव हैं, इस प्रकार जिले में औसतन 18 गांवों पर एक बैंक है।

शिक्षा

जिले में वर्ष 2009–10 में सरकार एवं निजी क्षेत्र द्वारा संचालित 1,317 प्राथमिक, 1048 उच्च प्राथमिक, 328 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक तथा वर्ष 2008 में 26 संस्कृत विभाग के, 71 शिक्षाकर्मी विद्यालय तथा 8 मदरसे हैं जिनमें 2,54,340 बालक बालिकाएँ अध्ययनरत हैं। 55.07 प्रतिशत बालक तथा 44.93 प्रतिशत बालिकाएँ अध्ययनरत हैं। अनुसूचित जाति के 17.26 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति के 12.70 प्रतिशत तथा अल्पसंख्यक वर्ग के 5.91 प्रतिशत बालक बालिकाएँ अध्ययनरत हैं।

ड्रापआउट व अनामांकित दर लडकों की तुलना में लडकियों की क्रमशः दुगनी व तिगुनी है। 2011 की गणना के अनुसार जिले की साक्षरता दर 62.51 प्रतिशत रही जो राष्ट्रीय औसत 74.04 प्रतिशत से बहुत कम है जिसमें से महिला साक्षरता की दर मात्र 46.98 प्रतिशत थी। जिले में मध्यान्ह भोजन के अन्तर्गत एक से आठ तक के 3,053 विद्यालयों के 2,58,401 विद्यार्थियों को भोजन दिया जा रहा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

चित्तौडगढ़ जिले में वर्ष 2010–11 में 2 चिकित्साल्य, 3 अस्पताल, 3 मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र, 14 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 39 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 300 उप स्वास्थ्य केन्द्र हैं। इनके अतिरिक्त वर्ष 2009–10 में 4 'क' श्रेणी आयुर्वेद चिकित्सालय, 96 'ख' श्रेणी आयुर्वेद चिकित्सालय तथा 5 होम्योपैथिक/यूनानी चिकित्सालय, 1 मोबाईल यूनिट कार्यरत हैं। राजकीय चिकित्सकों का अनुपात 1:11600 है। पूरे जिले में मात्र 10 महिला चिकित्सक हैं।

जिले में 18 वर्ष से कम आयु में विवाह करने वाली लडकियों की संख्या का प्रतिशत 63.5 है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रतिशत 73.6 है। जिले में संस्थागत प्रसव का कुल प्रतिशत 2007–08 के दौरान 45.1 प्रतिशत था। वर्ष 2008–09 के दौरान शिशु मृत्यु दर राज्य के औसत 50.84 से कम 48.63 है। वर्ष 2008–09 में पूर्ण टीकाकरण किए गए बच्चों का प्रतिशत 90.90 है।

परिवार नियोजन के क्षेत्र में नसबन्दी कराने वाली महिलाओं का प्रतिशत 63.7 है जबकि पुरुषों का मात्र 0.5 प्रतिशत है। चित्तौडगढ़ जिले में 31.14 प्रतिशत बच्चे कम वजन के पाए गए है।

जिले की चुनौतियां

पलायनः जिले में (लगभग 14.23 प्रतिशत परिवार) रोजगार की तलाश में राज्य के अन्य जिलों व गुजरात राज्य में पलायन करते हैं। वन क्षेत्र में कमी आने के कारण रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं। अकाल के समय पलायन दर में वृद्धि हो जाती है।

छोटी कृषि जोत तथा बडा श्रमिक वर्गः कृषि जोत छोटी हैं तथा अकुशल श्रमिकों की संख्या काफी ज्यादा है।

साक्षरता दर में कमीः ड्राप आउट दर अधिक है एवं साक्षरता प्रतिशत कम है। स्कूलों में रिक्त पद अधिक हैं। कक्षा– कक्षों की स्थिति दयनीय है।

स्वास्थ्य सेवाओं पर बढता बोझः जनसंख्या के हिसाब से स्वास्थ्य सेवायें कम पडती हैं।

मिड–डे मीलः आंगनबाडी केन्द्रों एवं पोषाहार की स्थिति में सुधार आवश्यक है। महिला पर्यवेक्षकों का ठहराव जरूरी है।

पेयजल एवं स्वच्छता के स्तर को सुधारने हेतु सामुदायिक सहभागिता आवश्यक है।

पर्यटन विकास की अपार सम्भावनायें उपलब्ध हैं।

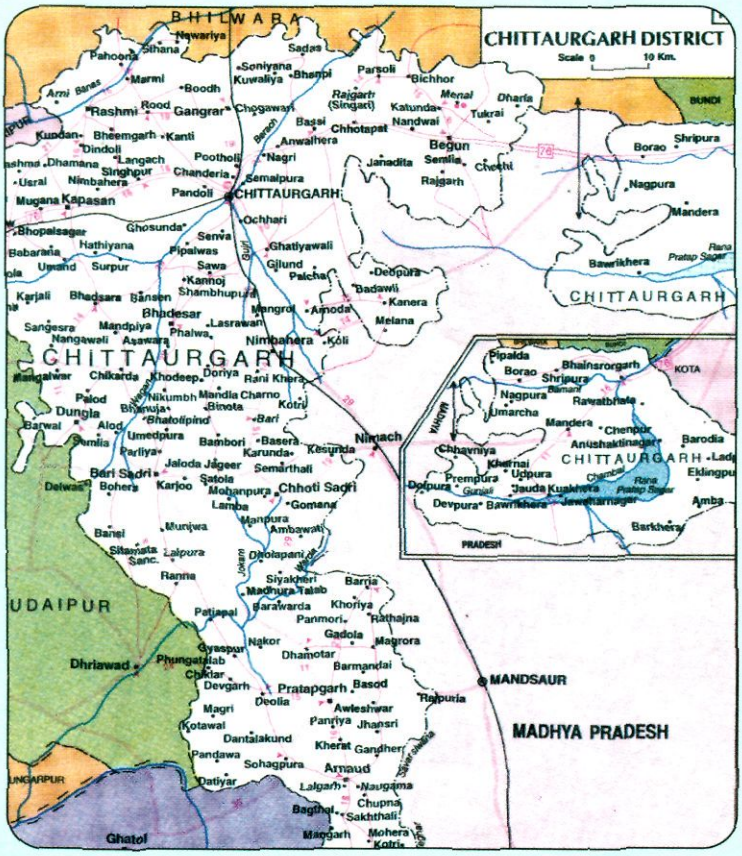

यू. एन. डी. पी.,
भारत सरकार
एवं
आयोजना विभाग
राजस्थान सरकार
जयपुर

सेन्टर फॉर गुड गवर्नेन्स
ह.च.मा. राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान
जयपुर 302017

design by MERCURY